खण्ड-239, अंक-7
शुक्रवार, 10 फाल्गुन, शक संवत् 1884
(1 मार्च, 1963 ई0)

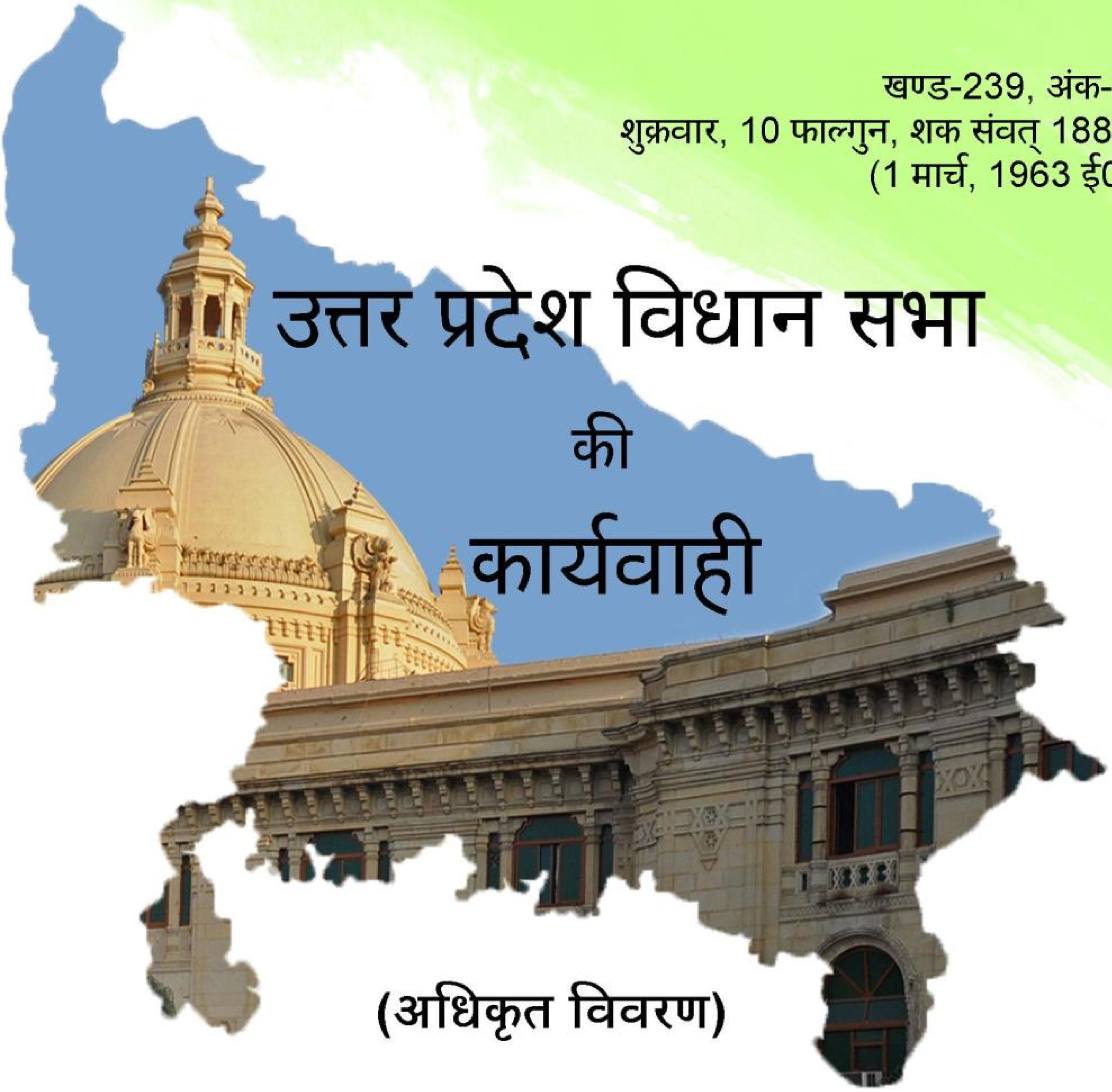

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 239 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
१९६३

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	४८५–४८८
भूतपूर्व राष्ट्रपति, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद के निधन पर शोकोद्गार ..	४८८–४९७

विधान सभा मध्य प्रदेश

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शुक्रवार, १ मार्च, १९६३

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ, में १० १/२ बजे दिन में उपाध्यक्ष श्री होतीलाल अग्रवाल, की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।)

उपस्थित सदस्य—३१८

अक्षयवरसिंह, श्री
अखण्डप्रतापसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनीसुर्रहमान, श्री
अब्दुल सनी, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधनारायणप्रतापसिंह, श्री
अवधेशकुमार सिनहा, श्री
अष्टभुजा, श्री
अहमद बख्श, श्री
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रासनसिंह, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
ईश्वरशरण, श्री
उग्रसेन, श्री
उमादत्त, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उल्फतसिंह यादव, श्री
ऊदल, श्री
ऋषिनारायण शास्त्री, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ओंकारनाथ द्विवेदी, श्री
कंवईलाल, श्री
कन्हैयालाल, श्री
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमलासिंह यादव, श्री
कलारानी मिश्रा, श्रीमती
कल्पनाथसिंह, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री (उपनाम छुन्नन गुरू)
कल्याणराय, श्री
काशीनाथ मिश्र, श्री
काशीप्रसाद द्विवेदी, श्री
किशोरीलाल अग्रवाल, श्री
कृष्णपालसिंह, श्री
कृष्णा, श्री
कृष्णानन्द राय, श्री
केदारनाथ भार्गव, श्री
केशभान, श्री
केशरीप्रसाद पांडेय, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशवराम, श्री
केशवसिंह, श्री
कैलाश, श्री
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खुशीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
खेमचन्द, श्री
गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद वर्मा, श्री
गंगाप्रसादसिंह, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद, श्री
गनेशीलाल चौधरी, श्री
गयाप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाप्रसाद, श्री
गिरधारीलाल, श्री (बिजनौर)
गिरधारीलाल, श्री (वाराणसी)
गिरवरप्रसाद, श्री

गुप्तारसिंह, श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गेंदासिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम, जाटव श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रपाल, श्री
चन्द्रबलीसिंह, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चुन्नीलाल, श्री
चैतन्यराजसिंह, श्री
छांगुर, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
जगदम्बाप्रसाद, श्री
जगदीशनारायण सिनहा, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री (बहराइच)
जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट, श्री
जगदीशशरण रस्तोगी, श्री
जगनप्रसाद रावत, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ राव, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जलील अब्बासी, काजी
जसरामसिंह, श्री
जुगलकिशोर, श्री
जुगलकिशोर, आचार्य
जे० ए० अहमद, श्री
जे० पी० मिश्र, श्री
झिलमिटराम, श्री
डल्लाराम, श्री
तारा अग्रवाल, श्रीमती
तेजनारायण त्रिवेदी, श्री
तेजभानसिंह, कुंवर
तेजसिंह, श्री
त्रेपनसिंह, श्री
दलजीतसिंह, श्री
दीनदयाल करबरिया, श्री
दीपनारायणसिंह, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
देवेन्द्र सिंह, श्री
दौलतलाल, श्री
द्वारकाप्रसाद पाण्डेय, श्री
द्विजेन्द्रनारायण, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
धूमप्रसाद, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरसिंहनारायण पाण्डेय, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नरोत्तमसिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायणसिंह, श्री
नित्यानन्द पांडेय, श्री
नियामतुल्ला अन्सारी, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नैनसिंह, श्री
नौनिहालसिंह चौधरी, श्री
पंचमदास, श्री
परमाई लाल, श्री
पशुपतिनाथसरनसिंह, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
पितईराम, श्री
पूरनलाल, श्री
प्रेमसुन्दर, श्री
फूलसिंह, श्री
बंकटसिंह, श्री (टुन्नूसिंह)
बंशीधर पांडेय, श्री
बंशीलाल, श्री
बद्रीप्रसाद पालीवाल, श्री
बनवारीलाल विप्र, श्री
बलवानसिंह, श्री
बलवीरसिंह, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बांकेलाल, श्री
बाबूलाल, श्री
बाबूसिंह, श्री
बालकराम वैश्य, श्री
बालेन्दुभूषणप्रतापसिंह, श्री
बिशनलाल यादव, श्री
बृजबिहारी, श्री
बृजमोहनलाल गुप्त, श्री
बृजरानी, श्रीमती
बृजेश्वर सहाय, श्री

बचनराम, श्री
बेदराम, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजनाथसिंह वैद्य, श्री
बैजूराम, श्री
ब्रह्मदत्त मायर, श्री
भगवानदीन, श्री
भगवानसहाय, श्री
भीखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
मंगलदेव, श्री
मंगल प्रसाद आर्य, श्री
मतोलासिंह, श्री
मदनपालसिंह, श्री
मनसाराम, श्री
मन्नालाल, श्री
महमूद हसन खां, श्री
महरामसिंह, श्री
महादेव, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महावीरसिंह, श्री
महेन्द्रसिंह, श्री
महेशचन्द्र, श्री
माताप्रसाद, श्री
माधोनारायण मुद्गल, श्री
माधोप्रसाद त्रिपाठी, श्री
मुकन्दीलाल बैरिस्टर, श्री
मुकुटबिहारीलाल, श्री
मुमताज मुहम्मद खां, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मुहम्मद हुसैन, श्री
मूलचन्द शास्त्री, श्री
मेवालाल जायसवाल, श्री
मैनेजरसिंह, श्री
मोहनलाल, आचार्य
मोहनलाल अहिरवार, श्री
मोहनलाल वर्मा, श्री
मोहनसिंह, श्री
यशपाल सिंह वर्मा, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रदत्त, श्री
यादवेन्द्रसिंह, श्री (लल्लनजी)
योगेश्वरप्रसाद खंडूड़ी, श्री
रक्षपालसिंह, श्री
रघुनाथ, श्री
रघुनाथप्रसाद, श्री
रघुनाथसिंह, श्री
रघुवीर, श्री
रघुवीर सहाय कैथवार, श्री
रघुवीरसिंह, श्री
रतीपाल, श्री
रणबहादुरसिंह, श्री
रमाकान्तसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथसिंह, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण मिश्र, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजाराम, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
राधेश्याम शर्मा, श्री
रामअनन्त पांडेय, श्री
रामअवध, श्री
रामआसरे, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशोर त्रिपाठी, श्री
रामकिशोर वर्मा, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामप्यारे, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति, श्री
रामलखन वकील, श्री
रामलखनसिंह, श्री
रामलाल, श्री
रामसमझावन, श्री
रामसिंह, श्री (मैनपुरी)
रामसुन्दर पांडेय, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रामेश्वरनाथ, श्री (उपनाम बोबे)
रियासत हुसैन, श्री
रुकुमसिंह राठौर, कुंवर

चन्द्रप्रतापसिंह, कुंवर
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लखपतराम शर्मा, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री (जौनपुर)
लालबहादुरसिंह, श्री (वाराणसी)
लोकपालसिंह, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
विक्रमशाह, राजा
विचित्रनारायण शर्मा, श्री
विजयकुमार, श्री
विजयपालसिंह, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विजयसिंह, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विश्वनाथ पांडेय 'प्रगव', श्री
विश्वनाथप्रसाद, श्री
विष्णुप्रतापसिंह, श्री
व्रजनाथ पांडेय, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुन्तलादेवी, श्रीमती
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषण मिश्र, श्री
शान्तिचन्द्र शुक्ल, श्री
शान्तिप्रपन्न शर्मा, श्री
शारदानन्द, श्री
शारदाभक्त सिंह, श्री
शिवदानसिंह, श्री
शिवप्रसाद, श्री
शिवमूर्ति, श्री
शिवराजसिंह, श्री
शिवसम्पति शर्मा, श्री
शिवेन्द्रप्रताप, श्री
शीतलप्रसाद, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामसुन्दर शुक्ल, श्री
श्रीनिवास, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर
श्रीराम, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद, श्री
सत्यदेव, श्री
सत्यनारायण पांडेय, श्री
सन्तसिंह यूसुफ, श्री
सहदेवसिंह, श्री
सालिग्राम जैसवाल, श्री
सियादुलारी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, डाक्टर
सीताराम, डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री (इटावा)
सुखलाल, श्री (लखनऊ)
सुचेता कृपालानी, श्रीमती
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरजन राम विशारद श्री
सुरेन्द्रदत्त, बाजपेयी, श्री
सुरेन्द्रविक्रमसिंह, श्री
सुशीला रोहतगी, श्रीमती
सूबेदारसिंह, श्री
सूरजपालसिंह, श्री
सेवाराम, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीद खां, श्री
हरिगैनराम, श्री
हरिनाथ तिवारी एडवोकेट, श्री
हरीदत्त कांडपाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीसिंह, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
हेतराम सिंह, श्री
हेमराज, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोट—नियोजन मंत्री, श्री हरगोविन्दसिंह, वन मंत्री, श्री अलगूराय शास्त्री तथा लघु उद्योग उपमंत्री श्री शिवप्रसाद गुप्त भी उपस्थित थे ।

भूतपूर्व राष्ट्रपति, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (श्री चन्द्रभानु गुप्त)—

उपाध्यक्ष महोदय, आज जब हम इस सदन में इकट्ठा हुए हैं, देश की उस महान् विभूति के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये इकट्ठा हुए हैं, जो कल रात्रि को हमारे बीच से सदा

के लिये उठ गयी । डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, हमारे भारतीय सामाजिक और राजनीतिक जीवन के गगनमंडल के वह तारे थे जिन्होंने पिछले ४०–४५ वर्षों में इस देश को विभिन्न दिशाओं में चमकाया और अपने देश में तथा दुनिया के बाहर के देशों में इस देश की परम्पराओं को फैलाने का प्रयास किया । डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, विद्यार्थी जीवन से ही ऐसे व्यक्ति थे जिनका ध्यान सदा देश की समस्याओं की ओर गया, देश के प्रश्नों की ओर गया, देश की दासता की ओर गया, देश की गरीबी की ओर गया। हम में से हर एक यह अच्छी तरह से जानता है कि उनका विद्यार्थी जीवन एक उत्तम श्रेणी के विद्यार्थी जीवन की तरह से व्यतीत हुआ था । वह कलकत्ता विश्वविद्यालय के एक ख्याति प्राप्त विद्यार्थी अपने विद्यार्थी जीवन में रहे थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय में जब-जब उन्हें परीक्षाओं में सम्मिलित होने का अवसर मिला तब-तब वह हमेशा अपनी कक्षा में अपने साथियों के बीच में प्रथम उत्तीर्ण हुये। कलकत्ता विश्वविद्यालय में जो प्रथम विद्यार्थी होता है उसे प्रेमचन्द राय स्कालरशिप मिलता है और उस समय जो विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में पास होता था और प्रथम आता था उसे उस जमाने में सरकारी ऊंची नौकरियों में जो भारतवासियों को उस समय उपलब्ध थीं पहला स्थान मिलता था। परन्तु डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, जैसा कि मैंने आरम्भ में कहा, सदा ही देश की समस्याओं के प्रति चिन्तित थे, उन्होंने सरकारी नौकरी करना पसन्द नहीं किया और वह पटना में आकर वकालत करने लगे। वकालत के जमाने में भी उन्होंने वकालत में अपना एक ऊंचा स्थान प्राप्त किया । जब गांधी जी ने अपना नान-कोआपरेशन और सत्याग्रह का आन्दोलन आरम्भ किया तो वह बिहार के उन पुरुषों में से थे, जिन्होंने उस आन्दोलन की अगुआगीरी की और अपनी वकालत आदि सब कुछ छोड़कर गांधी जी की दीक्षाओं के अनुसार कार्य करना आरम्भ किया और उत्तरोत्तर गांधी जी के विभिन्न आन्दोलनों में सम्मिलित होकर बिहार के निवासियों को प्रेरणा प्रदान करते रहे, उन्हें रास्ता दिखलाया और बहुत से नवयुवकों को उस आन्दोलन में सम्मिलित होने के लिये अपना साथी बनाया। हम सब उनके इस कार्य की गम्भीरता का अनुभव तभी कर सकते हैं जब हम इस बात को अपनी नजरों के सामने रखें कि उस समय जो इस प्रकार के व्यक्ति होते थे वह किस प्रकार से सरकार के विभिन्न प्रकार के प्रलोभनों को पा सकते थे, परन्तु डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने जब कभी भी ऐसा अवसर आया, जब उनसे हाई कोर्ट की जजशिप पर नियुक्त करने के लिये कहा गया तब वह उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने उससे भी इन्कार किया । जैसा मैंने कहा, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जब से गांधी जी ने आन्दोलन प्रारम्भ किया और जब तक गांधी जी जीवित रहे वह उनके उन अनन्य भक्तों में रहे,शिष्यों में रहे, जिन्होंने पूरी मात्रा में उस दिशा में कार्य करने की क्षमता प्रदर्शित की, जो क्षमता गांधी जी के जीवन का हिस्सा थी और जिस क्षमता के द्वारा गांधी जी ने इस देश की अपने जीवन काल में सेवा की। जब १९२१–२२ के आन्दोलन के बाद देश में इस बात की चर्चा चली कि कांग्रेसजनों को विधान सभाओं में जाना चाहिये या न जाना चाहिये, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद उन व्यक्तियों में से थे जो उस विचारधारा के समर्थक थे जो उस समय की स्थिति को देख कर विधान सभाओं में जाना पसन्द नहीं करते थे। परन्तु वे उन व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने जो व्यक्ति विधान सभा में जाना चाहते थे और जो उस विचार धारा का नेतृत्व करना चाहते थे कभी उनके कार्य में कोई अड़चन नहीं डाली। जब कोई बाहर एक निर्णय ले लिया गया तब उन्होंने उसका विरोध नहीं किया।

जब साइमन कमीशन आया और सारे देश में उस कमीशन के विरोध में प्रदर्शन हुए, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद बिहार के उन प्रमुख नेताओं और व्यक्तियों में से थे जिन्होंने उन प्रदर्शनों की अगुआगीरी की और ब्रिटिश साम्राज्य को इस बात की चेतावनी दी कि ब्रिटिश साम्राज्य का इस देश की जनता की राय के विरुद्ध कार्य करना देशवासियों को ब्रिटिश साम्राज्य का साथी नहीं बनायेगा और उस भावना को उत्तरोत्तर प्रगति देता रहेगा जिसके अन्तर्गत देश का नौजवान भारतवर्ष और ग्रेट ब्रिटेन का सम्बन्ध विच्छेद करना चाहते थे।

वर्किंग कमेटी के सदस्य के नाते सदा उन्होंने उन नीतियों का प्रतिपादन किया, उन विश्वासों को देश के अन्दर फैलाने की चेष्टा की, जिन विश्वासों के तहत में देश गांधी जी के आन्दोलनों के पीछे संगठित किया जा सकता था। जब अंग्रेज हुकूमत हिन्दुओं और हरिजन भाइयों को अपने

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

बटवारे की नीति से अलहदा करना चाहती थी, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद उन व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने ब्रिटिश नीति का गांधी जी के साथ मिलजुल कर भारी विरोध किया और, जैसा हम सब जानते हैं, गांधी जी के उस आन्दोलन ने, उस भूख हड़ताल ने,और उनके इन शिष्यों ने, जो देश में वातावरण पैदा किया उसने ब्रिटिश हुकूमत को मजबूर किया कि वह अपनी उस घोषित नीति में तबदीली लाये। जब चम्पारन में किसानों पर अत्याचार होता था और गांधी जी ने उन किसानों की समस्या को अपने हाथ में लिया, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद गांधी जी के एक शिष्य के नाते उनके पीछे बराबर चलते गये और उन्होंने उस आन्दोलन को वह शक्ति प्रदान की कि जिससे बिहार में एक नई चेतना और जागृति पैदा हुई। १९३३ में जब भूकम्प आया बिहार में वे सबसे प्रमुख समाजसेवी सिद्ध हुये। उन्होंने बिहार के उन गरीब और तकलीफ़ज़दा नागरिकों की जो सेवा की वह सदा समाज सेवा के कार्यों में ऊंचा स्थान रखती रहेगी और वह कभी भुलायी नहीं जा सकेगी। उसी भूकम्प के बाद वे इंडियन नेशनल कांग्रेस के बम्बई के सेशन में अध्यक्ष चुने गये और उस जमाने में जो ब्रिटिश नीति चल रही थी और जो कांस्टीटयूशनल रिफ़ार्म्स लाने की चर्चा चल रही थी उन बातों की पोल उन्होंने अपने सभापति भाषण से खोली और उन बातों को देश की जनता के समक्ष और ब्रिटेन के नागरिकों के समक्ष प्रस्तुत किया था जो थोथी बातें उन कांस्टीटयूशनल रिफ़ार्म्स के पीछे छिपी हुई थीं। जब जब हिन्दू और मुसलमानों के झगड़े हुये, जब जब मुस्लिम लीग ने गलत नीति अपनाने की चेष्टा की, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने उन गलत नीतियों का विरोध किया और जिन्होंने सदा इस बात को सिद्ध करने की चेष्टा की कि भारतवर्ष में यदि साम्प्रदायिकता कायम रही और यदि साम्प्रदायिक दृष्टिकोण को अपना कर देश में कार्यवाहियां चलती रहीं तो वह समाज और राष्ट्र हमारे बीच में जागृत नहीं रह सकेगा जिसको जागृत करना, जिसको पुनर्जीवित रखना, प्रत्येक भारतीय उस समय अपना कर्तव्य समझता था। कभी भी वे साम्प्रदायिकता के मुकाबले में झुके नहीं। जब जब फ़िरकापरस्त लोगों से लोहा लेने का अवसर आया उन्होंने बराबर उनसे लोहा लेने की चेष्टा की और अपने प्रदेश बिहार में उन तमाम संगठनों से मुकाबला किया जो उस जमाने की परिस्थितियों में उस दिशा में चल रही थीं जो दिशा संकीर्ण वातावरण देश में बनाने की चेष्टा कर रही थी। जब इंडिविजुअल सत्याग्रह देश में शुरू हुआ तब वे उसमें गये और जब १९४२ का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने उन प्रस्तावों को जो बम्बई में ७, ८ अगस्त को पास हुये थे गांधी जी के बाद जवाहरलाल जी के साथ मिल कर उस नारे को बुलन्द किया "अंग्रेजो भारत छोड़ो" और उस नारे की अगुआगीरी की और उस नारे ने और उस १९४२ की क्रान्ति ने देश में जो कुछ हमें दिया वह आज इस सदन के साथियों के समक्ष प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। जब १९४५ में वर्किंग कमेटी छूटी और उसके साथ वे भी छूटे और जब विभिन्न प्रकार के प्रपोज़ल्स, क्रिप्स प्रोपज़ल्स इत्यादि, देशवासियों के समक्ष आये, उन्होंने अपनी खुली राय और वह राय जिसके द्वारा देश का भला हो सकता था सदा वर्किंग कमेटी में प्रस्तुत की। १९४० और आज १९६३ के बीच में जो कुछ देश में हुआ है, वह सब हमारी सब की नजरों से गुजरा है। जब १९४७ के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में सरकार बनी तो वे उस सरकार के खाद्य मंत्री नियुक्त किये गये और खाद्य मंत्री के नाते किस तरह से उन्होंने नियंत्रणों की विभीषिका को देखा और किस तरह से उन्होंने अपने ही कार्यकाल में शकर पर से कंट्रोल हटाया, ये सब ऐसी घटनायें हैं जो भुलाई नहीं जा सकती हैं।

१९४८ से जब कांस्टीटुएन्ट असेम्बली का कार्य प्रारम्भ हुआ तो वे उसके अध्यक्ष बनाये गये और कांस्टीटुएन्ट असेम्बली ने जो कुछ दो ढाई वर्ष के परिश्रम के बाद इस देश को दिया आज उसके ऊपर भी प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है। जो कुछ आज हम सदन में कर रहे हैं और जो कुछ विधान सभा को अधिकार मिले हुये हैं और जो कुछ देश के गरीब किसान और मजदूरों को अपने प्रतिनिधि चुनने के अधिकार मिले हुये हैं, वे सब कांस्टीटुएन्ट असेम्बली की देन है, वह इस विधान की देन है जिसके बनाने में उन्होंने कांग्रेस की घोषित परम्पराओं और विश्वासों को जगह देने की उन कानूनों के अन्दर चेष्टा की थी।

वे विद्वान् थे और पग-पग पर अपनी विद्वता का परिचय देते थे। हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने में उन्होंने एक अगुआ का स्थान लिया और कभी भी उसे राष्ट्र भाषा बनाने में किसी संकीर्ण या संकुचित मनोवृत्ति का परिचय नहीं दिया। वे भारत के किसानों के लिये मरते थे, उनके लिये जीते थे और उनकी आवश्यकताओं को अच्छी तरह समझते थे। हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान दिलाने की अभिलाषा और आकांक्षा उनके हृदय में इसलिये थी कि वे इस देश के ७०-८० प्रतिशत किसानों की सेवा करना चाहते थे, जिन्हें अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं था और जो भारतीय भाषा के द्वारा अपने विचारों को प्रगट कर सकते थे, विचारों का आदान-प्रदान कर सकते थे।

कांस्टीटुऐन्ट असेम्बली के अध्यक्ष पद के बाद वे इस देश के प्रथम राष्ट्रपति बने और राष्ट्रपति बनने के बाद उन्होंने देश का कार्य कुशलता से किया और जिस सौजन्य का पग-पग पर परिचय दिया, वह सौजन्य उस भारतीय संस्कृति का अंश था जिसके वे पुजारी थे, पोषक थे और जिस के फैलाने के लिये उन्होंने जीवन पर्यन्त चेष्टा की। वह भारतीय सभ्यता के उन गुणों के प्रतीक रहे, जिन गुणों ने दूसरों को सदा प्रभावित किया, दूसरों को सेवा करने के लिए प्रेरित किया और दूसरों में आदर्श के पीछे मरने और मिटने की क्षमता पैदा की। यदि किसी व्यक्ति को यह कहा जा सकता है कि गांधी जी के बाद गांधी जी के विचारों को व्यावहारिक जामा पहनाने की किसी एक व्यक्ति ने चेष्टा की तो वह डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद थे। यों तो गांधी जी के विचारों वाले इस देश के अन्दर काफी और लोग भी हैं, काफी और भी विचारक हैं, परन्तु गांधी जी के विचारों को व्यावहारिक रूप देने की यदि किसी एक व्यक्ति ने चेष्टा की, तो उसमें यदि मैं यह कहूं कि डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद अग्रगी थे तो कदाचित् मेरा कथन ऐसा नहीं समझा जायगा जिसे अतिशयोक्ति कहा जाय।

पांच साल के बाद स्वतः वह दोबारा राष्ट्रपति के पद पर नहीं टिकना चाहते थे। परन्तु सारी लोक सभा ने उनसे आग्रह किया और बावजूद इसके कि वह स्वस्थ नहीं थे, उन्होंने दोबारा राष्ट्रपति के पद की जिम्मेदारियों को संभालने का निर्णय लिया।

जब वह विदेश गये, वहां भी उन्होंने जो असर विदेशियों के ऊपर अपने देश की नीतियों, अपने देश के विश्वासों का डाला, वह आज कौन नहीं जानता ?

ऐसे उत्तम गुण वाला व्यक्ति जिसने अपने सम्पर्क में जो कोई आया उसे भारतीय सभ्यता की चीजें दीं, वह हमारे बीच में न रहे तो कितनी खाई हमारे सामाजिक जीवन में पैदा हो जाती है ? भले ही आज वह अस्वस्थ थे, भले ही वह उस तत्परता का परिचय नहीं दे सकते थे जो कम उम्र वाले दे सकते हैं, परन्तु फिर भी वह अपने विचारों की दृढ़ता से इस युग के नौजवानों को प्रेरणा प्रदान करते थे और उनको प्रोत्साहन देते थे त्याग और अनुराग की दिशाओं में चलने के लिए। वह जीवनभर त्यागी रहे। उन्होंने लोक प्रदर्शन नहीं किया। जीवन पर्यन्त वह दूसरों को उस अनुराग का परिचय देते रहे जिसके द्वारा नयी पद्धतियां, नया समाज बनती हैं, नये विचार समाज के अन्दर जन्म लेते हैं। वे आज के युग में भले ही क्रान्ति की वह चमक और दमक न दिखा सके हों, परन्तु उन्होंने अपने जीवन से सदा आज के युग में उन क्रान्तिकारी विचारों को दिया जो क्रान्तिकारी विचार इस देश की जनता की सेवा करते हुए, और गरीब जनता की सेवा करते हुए इस देश के नागरिक जीवन को उत्कर्ष दे सकते हैं। यदि यह कहा जाय तो अनुचित न होगा कि कि रोजमर्रा सामाजिक और राजनीतिक प्रश्न के हल करने में हिस्सा लेते हुए भी वह हमारे देश के उन ऋषियों की प्रवृत्ति को अपने अन्दर रखते थे जो ऋषि मुनि हमें विचार देते थे और अपने को सांसारिक बन्धन से अलाहिदा रखते थे। आज हमारे बीच से इस युग में देश का वह निर्माता उठ गया जिसने अपने सौजन्य से अपने उत्कृष्ट विचारों के द्वारा, अपनी सेवाओं के द्वारा देश को उस दिशा में ले जाने का प्रयास किया कि जिस दिशा में चल कर उसने दुनिया के देशों में आदर और सम्मान प्राप्त किया। हमारे देश के आदरणीय नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपना एक सहयोगी और बुजुर्ग साथी खो दिया जो समय-समय पर जब कठिनाइयां आती थीं, जब दिक्कतें आती थीं, जब परेशानियां आती थीं, अपनी सद्भावना से

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

अपनी सद्बुद्धि से और अपने अनुभव से सदा उनको मदद देता था और सदा अपनी सलाहों का प्रभाव डाल कर उन्हें उस दिशा में चलने के लिये प्रेरित करता था कि जिस दिशा में चल कर इस देश का भला हो सकता ह, संसार का भला हो सकता है और पूरी मानवता का भला हो सकता है। एक पीड़ित मानवता का सहायक और सहयोगी आज संसार से उठ गया और उसके उठ जाने से मुल्क के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में जो क्षति पहुंची है वह क्षति कोई आसानी से पूरी नहीं की जा सकती है। वह क्षति बनी रहेगी, लेकिन जो कुछ वे हमें दे गये, जो कुछ नक्शा जीवन का वह हमारे सामने प्रस्तुत कर गये हैं, वह नक्शा सदा हमारे इतिहास के पन्नों में सुनहरे अक्षरों में स्थान पाता रहेगा और देश के आने वाले नागरिकों को प्रोत्साहित करता रहेगा। आज वे उनके ऊपर भी अधिक उत्तरदायित्व डाल गये हैं जो आज भी राजनीतिक और सामाजिक जीवन में कार्य कर रहे हैं। हम सबका कर्त्तव्य है कि हम उनके बोझे को सही प्रकार से सम्हालें और अपने उत्तरदायित्व को अपनी जगह पर रहते हुए इस प्रकार से पूरा करें कि जिससे यह देश उत्तरोत्तर प्रगति का मार्ग अपनाता जाय। अगर हम सब आज उनके हमारी नजरों से ओझल होने के बाद यह व्रत लेंगे कि हम उनके सिद्धान्तों पर चलने की क्षमता अपने अन्दर पैदा करें तो हम सही और सच्ची श्रद्धांजलि उस महापुरुष के प्रति अर्पित कर सकेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी ओर से और इस सदन की ओर से यह आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस सदन की समवेदना उनके घर वालों के लिये, प्रधान मंत्री जी के लिये और उन बिहार के साथियों के लिये भिजवाइये जिससे कि हम सब उस दुख में सम्मिलित हो सकें जो दुख आज बिहार को जिसके वह प्रथम नागरिक थे, हुआ है और हम उन साथियों के दुख में शामिल हों सकें जो साथी उनकी प्रेरणा से बिहार के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में बहुत वर्षों से कार्य करते रहे हैं। मैं इन चन्द शब्दों के साथ परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि यह विभूति, जो आज हमारे बीच से उठ गई है, वह उनकी आत्मा को शान्ति दे और हम सब को यह शक्ति प्रदान करे कि हम इस भारी दुख को बरदाश्त करने की क्षमता अपने अन्दर पैदा कर सकें। मैं इन चन्द शब्दों के साथ इस महापुरुष के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं।

*श्री यादवेन्द्रदत्त (जिला जौनपुर)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री ने जो बातें कही हैं उनसे मैं अपने को और भारतीय जन संघ को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, यह इस देश का एक बहुत बड़ा राजनीतिक महापुरुष उठ गया। डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने अपने जीवन में, जो बिहार की एक विशेषता रही—विदेह और जनक की उस विशेषता को उन्होंने हमारे सामने साकार किया। जीवन में रहते हुए भी जीवन से निर्लिप्त रहे। स्वयं की किसी प्रकार की आकांक्षा नहीं, स्वयं की किसी प्रकार की महत्वाकांक्षा नहीं। जीवन की एक ही आकांक्षा और महत्वाकांक्षा थी कि इस समाज को, इस राष्ट्र को, हम सुखी करें और इसको हम ऊपर उठावें। अगर मैं इसको एक ही शब्द में कहूं तो दूसरों के लिये, समष्टि के लिये अपना सब कुछ अर्पित कर दिया। मुझे १९५७ की एक घटना याद आती है कि जिस समय उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल में सूखा पड़ा हुआ था और राष्ट्रपति के नाते डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी काशी पधारे थे, ठंडक थी और उनको दमे का इतने जोर का अटैक था कि किसी स्वस्थ पुरुष का भी बैठना असम्भव हो जाता था, परन्तु अपने शरीर की चिन्ता न करते हुए, अपने कष्ट की चिन्ता न करते हुए, पूरे ३ घंटे वह बैठे रहे उस ठंडक में और जितने भी लोग आये सब की शिकायतें और कष्ट की बातें सुनना और उनको ढाढ़स देना और कष्ट के निवारणार्थ उचित मार्ग दर्शाना उन्हीं का काम था। मैं समझता हूं कि ऐसे गुण विरले ही पुरुषों में मिलते हैं कि अपने कष्ट की चिन्ता न करते हुए समाज के कष्ट निवारणार्थ अपने शरीर को तिल तिल जला देना। माननीय मुख्य मंत्री ने अभी कहा, यह सत्य बात है कि आज इस देश और प्रदेश में जो भी हम जनतन्त्र का रूप या जो भी ढांचा देखते हैं उस ढांचे के निर्माण में उनका प्रमुख हाथ था। अगर एक शब्द में कहूं, तो इन सब बातों के वह जनक थे। कभी उन्होंने किसी को कटु बचन नहीं कहा। "सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्" उन्होंने अपने जीवन में साकार किया। समय-समय पर समाज-रक्षण के लिये निःस्पृह होकर, जो उचित मार्ग-

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

दर्शन चाहा, दिया है और देते रहे। आज देश का वह नक्षत्र छिप गया जिसने अपनी अमिट छाप इस देश के इतिहास के पन्नों में डाली और हमारे स्वतंत्रता संग्राम का एक ज्योतिर्मय नक्षत्र रहा है। ऐसे समय में हमारे बीच में पथ-प्रदर्शन करने के लिये, इस प्रकार के विदेह पुरुष की आवश्यकता थी, परन्तु विधि की विडम्बना है और इसमें साधारण मानव का कोई हाथ हो भी नहीं सकता है। ऐसी स्थिति में ऐसे उज्जवल लोगों का उठना एक कष्टकर और दुख की बात है, परन्तु फिर भी उन्होंने जो पदचिन्ह जैसा मुख्य मंत्री जी ने कहा, हमारे सामने छोड़े हैं और जो हमारे सामने उनके जीवन के आदर्श हैं उनको सामने रख कर दृढ़ता के साथ हम लोग चलें तो मैं समझता हूं कि दुख का वहन होगा। परन्तु फिर भी इतना मैं अवश्य आप से निवेदन करूंगा कि आप भारतीय जन संघ की ओर से और हम सब की ओर से उस संतप्त परिवार तक हमारी दुःखित समवेदना अवश्य पहुंचा दें और मैं समझता हूं कि मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से सहमत हूं इस बात पर कि वास्तविक श्रद्धांजलि हुआ करती है उस मनुष्य के उन आदर्शों पर चलकर जिन आदर्शों से समाज रचना हुई हो, उन आदर्शों का संरक्षण और उन आदर्शों का पोषण होना चाहिये। भगवान् हम लोगों को शक्ति और सामर्थ्य दे इस महान् कष्ट से जो आज समस्त राष्ट्र पर आया है इस कष्ट की कसौटी से हम सफलतापूर्वक पार हो सकें। इन चन्द शब्दों के साथ मैं जन संघ की ओर से और अपनी ओर से आदरणीय डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी जो वास्तव में भारत रत्न थे, किसी प्रकार की उपाधि से नहीं, बल्कि माता के सुपुत्र के रूप में और सुपुत्र ही नहीं, बल्कि माता के एक उज्जवल पुत्र के रूप में, एक रत्न के रूप में थे, ऐसे भारत रत्न के प्रति मैं जन संघ की ओर से और अपनी ओर से समवेदना श्रीमन् के सामने प्रस्तुत करता हूं और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

*श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यूं तो राष्ट्रपिता बापू के निधन के बाद इस गगनमंडल से अनेकों सितारे टूटे, छोटे या बड़े, लेकिन आज देश-रत्न के निधन से हमारा सूर्य अस्ताचल को चला गया, चन्द्रमा की चांदनी विलीन हो गयी। श्रीमन्, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो भावनाएं व्यक्त की हैं उनके साथ मैं अपनी और अपने समाजवादी दल की भावनाओं को संबद्ध करता हूं। आदरणीय देशरत्न का दर्शन मैंने तो अपने बचपन में किया था। मेरा तो जिला उनका पड़ोसी जिला है और जब कभी भी हम लोग उनसे मिलते थे तो जिस मधुर भोजपुरी में वह हमसे बात किया करते थे उसकी याद हमारे मानस पटल पर अंकित है। मैंने उनको बड़ी कठिन परिस्थितियों में देखा। त्रिपुरा कांग्रेस में वह बवंडर, जिसमें राष्ट्रपिता और बड़े-बड़े हिन्दुस्तान के राजनीति के नेताओं का दिमाग भी चकरा गया था उसमें मैंने उस देशरत्न को देखा था कि किस सौम्य के साथ, धीरज के साथ वह बड़े-बड़े प्रश्नों को निपटा देते थे। राष्ट्रपति होने के बाद उनकी सवारी जब दिल्ली में निकली वह छटा भी हमको देखने को मिली और देश को भारतीय संविधान निर्मात्री समिति के द्वारा जो कुछ उन्होंने दिया वह सही है कि वह एक अमूल्य निधि है। उन्होंने सब से बड़ी निधि जो हमें दी वह अपनी राष्ट्रभाषा के गौरव के प्रस्थापन के रूप में दी। आज, श्रीमन्, जब कि केन्द्रीय सरकार लोकसभा में अंग्रेजी को सहभाषा बनाने का कुचक्र रच रही है, ऐसे महान् रत्न का हमारे बीच में रहना बहुत ही जरूरी था। श्रीमन्, मैं अधिक नहीं कहना चाहूंगा, इस अवसर पर कहा नहीं जाता है मगर हाल की एक घटना की याद मैं आप के द्वारा इस आदरणीय सदन को और देश की जनता को दिलाना चाहता हूं। देशरत्न जी बीमार थे जब उनसे निवेदन किया गया कि पटना के 'हिमालय बचाओ' आन्दोलन की अध्यक्षता आप करें तो बीमारी के बावजूद, डाक्टरों के रोकने के बावजूद उन्होंने इसको स्वीकार किया और अध्यक्षता करते हुए जो एक ऐतिहासिक बात उन्होंने कही वह यह कि तिब्बत शिशु की हत्या की गयी, हम मौन रहे, और अब उसके प्रायश्चित स्वरूप हमें उसे आजाद कराना है। मैं देखता हूं कि पार्थिव शरीर आता है, चला जाता है, मगर मनुष्य के विचार रह जाते हैं। मैं चाहता हूं कि उस महामहिम की अमर वाणी, जो 'नगाधिराज बचाओ' सम्मेलन में गूंजी उसकी पूर्ति हम सभी करेंगे और हमारा यह परम कर्तव्य होता है कि उनके आदर्शों पर चलकर हम अपने देश को उन्नति के मार्ग पर ले जायं। उनके समान देश-भक्त भारतीय आत्मा का सजग प्रहरी,

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री उग्रसेन]

राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक और राष्ट्रभाषा का इतना बड़ा सजग प्रहरी शायद ही कोई देखने को मिले। मैं इस अवसर पर आज अपनी और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए निवेदन करूंगा कि आप हमारी और हमारे दल की ओर से श्रद्धांजलि उनके संतप्त परिवार के पास भेज दें।

*श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)---

श्रीमन्, आज देश का जितना बड़ा नुकसान हुआ है जबकि संकटकालीन समय था, मुझे उम्मीद नहीं कि उसकी क्षति पूरी हो सकती है। किसी भी देश को गर्व हो सकता है किसी किसी महान् हस्ती पर, उनमें से डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद थे। श्रीमन्, राजेन्द्रप्रसाद जी सादगी के आदर्श थे, जिन्होंने अपने जीवन में राष्ट्रपति के पद पर होते हुए कभी भी अपने पद का और लोभ का सहारा नहीं लिया। इतने बड़े पद पर इतना बड़ा योगी होगा, यह हमने अभी देखा है और योगी की तरह उनमें डर, लोभ, मोह नहीं था। जिन्दगी भर उन्होंने अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। आज भी जबकि वे राष्ट्रपति के पद से हटे तो वह बिहार में जाकर सदाकत आश्रम में गये। वहां से भी उन्होंने अपनी एक आवाज दी। कितनी मजबूत आवाज थी, यह मुल्क नहीं समझ पाता था। उन्होंने उस आश्रम से कहा कि आज तिब्बत को भी आजादी मिलने का हक है, वह जानते थे इस चीज को। वह विद्वत्ता के प्रतीक थे। उन्होंने संकटकालीन समय में जो रोशनी दी वह बेमिसाल थी। मैं ऐसा समझता हूं कि अगर गांधी जी के लिए राजघाट एक प्रतीक है तो आज दूसरा राजघाट सदाकत-आश्रम है जहां पर डाक्टर साहब की समाधि है, वह भी हमारा एक दूसरा आश्रम है। उन्होंने हमको एक देन दी है जिसके लिए संसार की किसी भी श्रद्धांजलि का अर्पण नहीं हो सकता सिवाय इसके कि हम उनके गुणों को अपनाएं। मैं यह नहीं कह सकता कि आज हम उनके परिवार को अपनी तरफ से श्रद्धांजलि दें, क्योंकि मेरे अहसास से आज उनका कोई अलग परिवार नहीं है, बल्कि हम सभी उनके परिवार के हैं, यह मुल्क उनके परिवार का है और आज ४५ करोड़ इंसानों के ऊपर आज मुसीबत है। जिस हस्ती ने अपना एक एक सांस इस मुल्क के बनाने में गुजारा हो उसके लिए श्रद्धांजलि केवल उसके परिवार के लिए नहीं होती है। इसलिए मैं अपनी और अपनी पार्टी की तरफ से उनके लिए, सब मुल्क के सामने जिन खूबियों को उन्होंने छोड़ा है, इस संकटकाल में उनको अपनाकर हम मुल्क के नाम को ऊंचा कर सकें, यही सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

*श्री जेड० ए० अहमद (जिला आजमगढ़)---

मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से, जिन जज्बात को यहां सदन में माननीय मुख्य मंत्री जी ने पेश किया है, उनके साथ जोड़ना चाहता हूं। आज सुबह जब मैंने अखबार में यह अफसोसनाक खबर पढ़ी तो मुझे एक धक्का-सा लगा, और कठोरता के साथ धक्का लगा, क्योंकि हमारे इस एक लम्बे-चौड़े कारवां का एक अलमबरदार हट गया और अब उस जगह को भरना मुश्किल हो गया। आज हिन्दुस्तान के हर हिन्दुस्तानी को उससे धक्का लगा है, लेकिन बाद को मैंने सोचा कि आखिर यह धक्का क्यों लगता है। क्या इसके दूसरे पहलू को नहीं देखा जा सकता? यह वह इतना बड़ा इन्सान था जिसने अपनी जिन्दगी के मिशन को पूरा किया, शान के साथ पूरा किया, सेवा और खिदमत के जज्बों को लेकर पूरा किया और एक मंजिल पर पहुंचा जहां उसकी जिन्दगी का काम तकरीबन पूरा हो गया। तो दूसरे पहलू को देख कर खुशी भी होती है। एक हमारे हिन्दुस्तान का बच्चा, और मामूली बच्चा, कोई राजा, महाराजा या बड़े आदमी का बच्चा नहीं, मामूली किसान के घर में पैदा हुआ बच्चा, नौजवानी की उम्र में उसके दिल में आजादी के लिये एक तलब पैदा होती है और वह आजादी की लड़ाई के मैदान में आता है, अपने सर पर कफन बांध कर उसमें कूदता है, और उस मैदान में आकर आजादी के लिए एक नया दौर पैदा करता है, सन् १९१८ में। उस वक्त वह आजादी के पौधे को सींचता है, और वह खुशकिस्मत है कि वह अपनी आंखों से उस आजादी के पौधे को फलता-फूलता देखता

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

है, और जब वह उसे फलता-फूलता देखता है तो एक नया बाग पैदा होता है, उसी के सामने। वह कितना खुशकिस्मत इंसान था ? कितने ऐसे लोग खुशकिस्मत होते हैं ? १९१८ में उन्होंने उसकी एक बुनियाद डाली थी। मौत की घड़ी तो सब की आती है, मगर जो काम उन्होंने अपनी जिन्दगी में किया, जो मुल्क की सेवा की, आजादी दिलवाई, और वह सब देखकर आज वे संतोष के साथ इस दुनिया को छोड़ कर दूसरी दुनिया में जा रहे हैं, यह सब संतोष कितने लोगों को मिलता है ? राजेन्द्र बाबू, आप उन्हें डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद कहें, मैं तो उन्हें राजेन्द्र बाबू ही कहूंगा। बड़े खुशकिस्मत लोगों में से थे। मुझे वह दिन याद है जब कि हम नौजवान लोग भटकते फिरते थे, हमारे दिमाग में काफी पालिटिक्स वगैरह थी, मगर सही रास्ता नहीं मिलता था। वह रास्ता हमें उन्होंने दिखाया। राजेन्द्र बाबू की क्या देन थी ? उनकी यह देन थी कि हिन्दुस्तान की गरीब जनता से जुड़ी। अपनी जिन्दगी में, अपने खयाल में, अपने अमल में, जबान में, अपनी भाषा में गोया हर तरीके से वह किसान, एक सच्चे किसान और ऋषी थे। उनका जीवन किसान का जीवन था, भोजपुरी में वह अक्सर बोला करते थे। हालांकि यह कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन दिमाग उनका जुड़ा हुआ था उस गरीब के साथ, उस गरीब किसान के साथ जो हिन्दुस्तान की रीढ़ की हड्डी है। यह तौर-तरीका उनका मुतवातिर रहा। साथ ही, जब कभी राष्ट्रपति भवन में हम लोग उनके दर्शन करने के लिये जाया करते थे, हम तो खैर पार्लियामेंट के मेम्बर थे, लेकिन जब गरीब किसान बिहार को जाता था लंगोटी बांधकर तो उसे भी वैसे ही प्रेम और मुहब्बत के साथ बैठाते थे। यह खास बात उनके अन्दर थी। उनके अन्दर यह नहीं था कि एक बड़ा भारी राष्ट्रपति बैठा हुआ है, उसके पास कोई छोटा आदमी नहीं पहुंच सकता। ऐसे इंसान के चले जाने से चोट पहुंचती है, लेकिन वह इंसान गया नहीं है, वह जिन्दा है, वह अमर है। उसकी यादगारें मिट नहीं सकतीं। हमें याद रखना चाहिये कि उन्होंने हमारे राष्ट्रीय जीवन को ऐसी बड़ी-बड़ी देन दी हैं जिनको अगर हम भुला देंगे तो हमारा राष्ट्रीय जीवन बरबाद हो जायगा। हमें याद रखना है कि वह कितने सादा थे, हमें याद रखना है उनकी सादगी को, उनकी सहनशीलता को, उनकी प्रेम की भावनाओं को, उस टालरेंस को, जिसके जरिये उन्होंने हमारे राष्ट्रीय जिन्दगी को बेहतर बनाया है। अगर हम गुस्से को लेकर, बर्दाश्त न करने की भावना को अपने दिलों में लेकर चलते हुए नया राष्ट्र बनाने की कोशिश करेंगे तो यह राष्ट्र टुकटे-टुकड़े हो जायगा। इसमें कोई शकोशुबहे की बात नहीं है। महात्मा गांधी के जीवन के उस प्रेम के पैगाम को समझना चाहिये। वह सिर्फ मैटाफिजिकल बात नहीं है। वह एक अमली बात है। हम मुहब्बत का माद्दा लेकर चलेंगे तभी जाकर नया हिन्दुस्तान बना सकेंगे, वरना जैसा मैंने पहले निवेदन किया, यह देश टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा। हमें उन महापुरुषों की बातों को ऊंचा उठाना है, उनको अपने दिमागों में रखना है और उसके आधार पर नयी जिन्दगी का तानाबाना बनाना है। राजेन्द्र बाबू जीवित हैं, मरे नहीं हैं, वह हमारे दिलों में हमेशा रहेंगे।

इन अलफाज के साथ मैं अपनी पार्टी की तरफ से और अपनी तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और पूरे तौर से मुख्य मंत्री जी की बातों से अपने को एसोशियेट करता हूं।

श्री चैतन्यराजसिंह (जिला अलीगढ़)----

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो विचार और श्रद्धांजलि इस माननीय सदन के सामने पेश की उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं और अपनी पार्टी की ओर से मैं आपसे निवेदन करूंगा कि स्वतंत्र पार्टी की ओर से और मेरी ओर से डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी के संतप्त परिवार को समवेदना आप पहुंचा दें और जिन आदर्शों के लिये राजेन्द्र बाबू जिन्दा रहे थे उन्हें हम लोग कायम रखने की कोशिश करें, यही हमारी उनके प्रति श्रद्धांजलि है।

श्री भगवानसहाय (जिला शाहजहांपुर)---

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो विचार डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी के निधन पर व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने दल को व अपने को पूर्णतया सम्बद्ध करता हूं।

[श्री भगवानसहाय]

उपाध्यक्ष महोदय, यकबाददीगर हिन्दुस्तान के राजनैतिक वंश से बड़े-बड़े महारथी इस संसार को छोड़ कर जा रहे हैं। डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद उन व्यक्तियों में से थे जो क्लास रूम में, स्कूल के क्लास रूम में, युनिवर्सिटी में जिनका कैरियर ब्रिलियेंट था। जब वह वकालत के पेशे में आये तो वहां पर भी वह सबसे ऊंचे थे। कलकत्ता यूनिवर्सिटी का उन्होंने विद्यार्थी की हैसियत से रेकार्ड तोड़ा और नया रेकार्ड स्थापित किया। पटना में जब नया बार बना तो वह उसके लीडर रहे थे और वकालत में जो ईमानदारी, मेहनत और नये ख्यालात उन्होंने निकाले उनके लिये बिहार की बार उनकी आज भी याद करती है। ऐशोइशरत की जिन्दगी उन्हें पसन्द नहीं थी। वह सादा रहते थे। गांधी जी की आवाज पर किसानों की तकलीफ को याद करके, गरीबों की हमदर्दी में उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया और चम्पारन के मूवमेंट में गांधी जी के साथ, जैसा माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा, उन्होंने गांधी जी के विचारों को प्रैक्टिकल शेप दी। उनकी जिन्दगी हमारे लिये नजीर है। जब हम मुसीबत में हों, तारीकों में हों, उनकी जिन्दगी से हमको रोशनी मिलती है, उस मुसीबत को हल करने में उनकी जिन्दगी हमारी मदद करती है और हमें उससे बल और प्रोत्साहन मिलता है। यद्यपि आज डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद नहीं हैं, लेकिन उनकी जिन्दगी आने वाली पुश्त के लिये, जैसाकि मौजूदा पुश्त के लिये करती हैं, रोशनी दिखाती रहेंगी। संकट के समय में उनकी बातें हमारी मुसीबतों को हल करने के लिये हमारे काम में आवेंगी।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा अपनी पार्टी और अपनी ओर से डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद को श्रद्धांजलि पेश करता हूं और, जैसा माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा, आप हमारे विचारों को हमारे दुखी विचारों को हमारी समवेदना को उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री उपाध्यक्ष--

माननीय मुख्य मंत्री और दूसरी हमारी पार्टियों के नेताओं ने जो भावनाएं और जो विचार प्रकट किये हैं मैं अपने को उन सबसे सम्बद्ध करता हूं। सन् १९१७ में जब राजेन्द्र बाबू गांधी जी के साथ निलहे गोरों के सत्याग्रह में शामिल हुए थे तो वह पहली घटना थी जिसने मेरे ऊपर बड़ा असर डाला था और उसी समय से मैं इस क्षेत्र में, राजनीति के क्षेत्र में आया। वह भावना मेरे दिल में आज भी है और मैं जानता हूं कि किस तरह से उस घटना ने हमारे करीब-करीब बहुत से साथियों पर वह सही असर डाला था। राजेन्द्र बाबू शुरू से ही गरीबों की हिमायत में बड़े-बड़े काम करते रहे। महात्मा गांधी की जो एक अहिंसात्मक समाज कायम करने की नीति थी उसमें राजेन्द्रबाबू ने प्रमुख भाग लिया था। उन्होंने अपने जीवन के बड़े से बड़े ओहदे पर पहुंच कर, राष्ट्रपति पदासीन होने के बाद भी सादा जीवन बिताया और वैसी ही सरलता और प्रेम दिखाया जैसा कि अहिंसात्मक समाज में होना चाहिये। उन्होंने अपनी मिसाल से एक ऐसा वातावरण कायम करने की कोशिश की जिससे अहिंसात्मक समाज बन सकता है। हम सभी जानते हैं कि आजकल की इस दुनिया में कितने झगड़े हैं, कितनी चीजें हैं। अहिंसात्मक समाज तभी बन सकता है जब हम सब सबसे पहले अपने को सम्भालने की कोशिश करें और वह तभी हो सकता है जबकि हम उस तरह से चलना सीखें जैसाकि दुनिया के सब लोग चल सकते हैं। इसी भावना को लेकर राजेन्द्रबाबू ने बराबर काम किया। राजेन्द्रबाबू ने बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण कार्य किये। महात्मा गांधी के सच्चे सेवक और सच्चे शिष्य के नाते उन्होंने गांधी जी के सिद्धातों को सारी दुनियां में फैलाया। राजेन्द्रबाबू की हमारे देश को बहुत-सी देन है। उस कान्स्टीटुयेंट असेम्बली के वे अध्यक्ष थे जिसने हमें यह संविधान दिया है। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने बहुत बड़े और महत्त्वपूर्ण काम किये जिनके बारे में अधिक कहना इस समय उपयुक्त नहीं है। जैसा डाक्टर साहब ने कहा, उन्होंने ऋषि-मुनियों का जीवन व्यतीत किया और ऋषि-मुनियों के समान ही मौत पायी, लेकिन अपने स्वार्थवश हम यह कहते हैं कि आज इस संकट-कालीन स्थिति में, जब कि चीन ने हमारे देश पर हमला किया है, राजेन्द्रबाबू की सलाह की हमें बड़ी भारी आवश्यकता थी। ऐसे समय में उनके उठ जाने से देश के सामने एक गंभीर स्थिति

पदा हो गयी है। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति होना नामुमकिन है। हमारे कर्णधार, राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू को सलाह देने के लिये राजेन्द्रबाबू जैसे राजनीतिज्ञ नहीं मिल सकते। मुझे इन सब बातों से बड़ा क्षोभ हुआ है। यह दूसरी बात है कि राजेन्द्र बाबू ने जो ऋषि और मुनियों की मौत पायी भले ही हम सब उस तरह की मौत चाहते हों, लेकिन उनके हमारे बीच से उठ जाने से जो क्षति हमें हुई है उसका हमें दुःख है।

अतः जो विचार यहां प्रकट किये गये हैं उन सब विचारों के साथ मैं अपने को संबद्ध करता हुआ आपकी उन भावनाओं को उनके परिवार, प्राइम मिनिस्टर, श्री जवाहरलाल नेहरू तक पहुंचा दूंगा तथा बिहार के चीफ मिनिस्टर साहब के पास तक भी आपकी समवेदना भेज दूंगा।

अब हम दिवंगत आत्मा की शांति के लिये दो मिनट तक खड़े होकर प्रार्थना करेंगे।

(सब सदस्य दो मिनट के लिए अपने अपने स्थान पर खड़े हो गये।)

श्री उपाध्यक्ष—

अब आज डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद के निधन के अवसर पर यह सदन और काम नहीं करेगा। हम अब उठते हैं और कल साढ़े दस बजे फिर मिलेंगे।

लखनऊ :
१ मार्च, १९६३।

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

पी० एस० यू० पी०—ए० पी० ३३६ एल० ए०—१९६३ (प्रो०)—८५०।